बालमेला – मज़ा ही मज़ा

कालू राम शर्मा

बरामदे में बैठे मास्साब ने मन ही मन तय कर लिया था कि बच्चों के लिए बालमेले का आयोजन किया जाना है।

मास्साब बुदबुदाए, "कुछ तो करना होगा। कुछ करेंगे तो कारवाँ आगे बढ़ेगा..."

मास्साब जब मासिक बैठक में पहुँचे तो *एकलव्य* के सदस्य स्कूल के बाहर चाय की गुमटी पर मिल गए। दुआसलाम के बाद मास्साब ने चर्चा शुरू कर दी, "आपसे एक ज़रूरी बात करनी है।"

एकलव्य के सदस्य ने कहा, "अभी कर लेते हैं... भील भई को ढील नहीं... जो बात है यहीं करके आगे बढ़ते हैं।"

यह कहते हुए एक सामूहिक ठहाका गूँज उठा।

मास्साब ने चाय की आखिरी चुस्की लेते हुए प्रस्ताव रखा, "हम अपने स्कूल में बालमेला करना चाहते हैं। आपकी मदद चाहिए।"

एकलव्य के सदस्य ने 'हाँ' में सिर हिलाया। "तो कब करना चाहते हैं? कितने बच्चे होंगे? और क्या करेंगे?"

मास्साब चाय का खाली गिलास रखते हुए बोले, "बाल मेला तो हम बच्चों के लिए करना चाहते हैं। खर्चे की व्यवस्था हम अपने स्कूल के लोकल फंड और गाँव से कर लेंगे। ...ये काम आप मेरे ऊपर छोड़ दीजिए। आप तो बस अपनी टीम को भेज दो तो मज़ा आ जाएगा।"

"तो, ऐसा करते हैं कि बैठक में चर्चा कर लेते हैं।" चाय की गुमटी से निकलकर *एकलव्य* के सदस्य और शिक्षक मासिक बैठक के कमरे में पहुँच गए।

मासिक बैठक में चर्चा की शुरुआत बालमेले के आयोजन से हुई। सभी शिक्षक माँग कर रहे थे कि हमारे स्कूल में भी बालमेला किया जाए।

मास्साब बोले, "मेरी राय है कि अगर हमारे स्कूल में सभी स्कूल के बच्चे और शिक्षक साथी आ सकें तो हम सब मिलकर एक सामूहिक बालमेला कर सकते हैं।"

सभी को मास्साब का सुझाव पसन्द आया। बैठक में बालमेले की तिथि तय कर ली गई। *एकलव्य* के साथी ने आश्वस्त किया कि बालमेला टीम स्कूल में आकर पूर्व-तैयारी वगैरह की बात कर लेगी।

मास्साब और शिक्षकों ने तय किया कि बाकी स्कूलों के बच्चे और शिक्षक कैसे और कब बालमेले में पहुँचेंगे।

चलो, चर्चा करते हैं

एकलव्य से दो साथी बालमेले की निर्धारित तिथि के हफ्ते भर पहले मास्साब और अन्य शिक्षकों के साथ तैयारी को लेकर चर्चा करने के लिए पहुँच गए थे। वहाँ पहुँचकर वे मास्साब और प्रधानाध्यापक से बोले, "तैयारी में समय लगेगा। आप तो जानते हैं कि अपना बालमेला किस तरह का होता है। इसमें बच्चों की भागीदारी प्रमुख होगी। न कोई कॉम्पीटीशन, न ही प्राइज़..."

मास्साब बोले, "देखिए, अपन जो चाहेंगे वो हो जाएगा। कोई दखल देने वाला नहीं है। अपन अलग-अलग कॉर्नर लगाएँगे। एक मिट्टी के खिलौने का, दूसरा ऑरीगेमी का, तीसरा...।"

"तो चलो बात पक्की समझो... हम अपनी टीम लेकर आपके स्कूल में एक दिन पहले पहुँच जाएँगे।" *एकलव्य* के साथियों ने मास्साब को आश्वस्त किया। "आपके ज़िम्मे काम है - एक तो बच्चे सुबह दस बजे स्कूल में आ जाएँ। बस्ता वगैरह लेकर नहीं आना है। एक काम हो सकता है कि हम सभी बच्चों को मैदान में इकट्ठा करके बात कर लें।"

मास्साब ने हामी भरते हुए कहा, "पीरियड जैसे ही खत्म होता है, हम सभी मैदान में आ जाते हैं। फिर अपन बच्चों से बात कर लेते हैं।"

सभी बच्चे मैदान में आ चुके थे। *एकलव्य* के सदस्यों को बच्चे अच्छे से पहचानते थे। "तो... दोस्तो, हम सब एक बालमेला करने जा रहे हैं तुम्हारे स्कूल में... बालमेले के दिन कोई भी अपना बस्ता लेकर नहीं आएगा। बस, तरह-तरह की गतिविधियाँ करेंगे और खूब मज़ा करेंगे।"

बच्चे एक-साथ बोले, "हाँ, मज़ा आएगा।" बच्चों की आवाज़ स्कूल के बाहर तक पहुँच रही थी।

बालमेला और बच्चों का उत्साह

आखिर वह दिन आ ही गया। संगम केन्द्र के सातों स्कूलों के बच्चे और शिक्षक स्कूल में प्रवेश कर चुके हैं। मास्साब स्कूल के द्वार पर बच्चों और शिक्षक साथियों के स्वागत में लगे हुए हैं। प्रत्येक समूह के बच्चों को एक छोटी-सी कार्ड शीट पर

उनके समूह का नाम लिखा हुआ दिया गया, जिस पर हर विद्यार्थी को अपना नाम लिखकर सेफ्टी पिन से लगाना था।

बड़ों के सीने पर भी बच्चों के समान ही नाम वाली तख्ती लटक रही है।

बच्चों के अलग-अलग समूह बनाए जा रहे हैं और उन्हें नदियों का नाम दिया गया है। एक समूह है गंगा, दूसरा यमुना, तीसरा क्षिप्रा, चौथा चम्बल, पाँचवाँ गम्भीर, छठवाँ नर्मदा, सातवाँ कालीसिन्ध और आठवें समूह का नाम मान नदी। बालमेला शुरू हो चुका है। आज का दिन बच्चों के लिए बस्ता-रहित है। स्कूल में आज प्रार्थना का आयोजन मुलतवी कर दिया गया है। मैदान में सामूहिक गीत गाए जा रहे हैं।

बच्चों के चेहरों पर खुशी और आँखों में चमक छाई हुई है। वे ऊर्जा, उत्साह और उमंग से लबरेज़ प्रतीत हो रहे हैं। सभी बच्चे अपने मनपसन्द कॉर्नर्स में पहुँच रहे हैं। आज किताब की पढ़ाई से मुक्त हैं बच्चे।

बालमेले का लुत्फ उठाने के लिए गाँव के वे बच्चे भी स्कूल में घुस चुके हैं जो स्कूल में भर्ती नहीं हो पाए हैं। वे युवा भी जो स्कूल की पढ़ाई पूरी कर चुके हैं। आसपास के स्त्री-पुरुष भी ताँक-झाँक कर रहे हैं। कुछ छोटे बच्चे, जिनकी उम्र अभी स्कूल जाने लायक नहीं हुई, वे भी बालमेले में शामिल होने को आतुर दिखाई दे रहे हैं। बालमेला आयोजक ने नन्हे बच्चों को बालमेले में भाग लेने की छूट दे दी है।

बालमेले में ब्लॉक और ज़िले के शिक्षा अधिकारी समेत गाँव के पंच और सरपंच आ चुके हैं। वे हरेक कॉर्नर में जा-जाकर बच्चों की गतिविधियों का अवलोकन कर रहे हैं। जब वे ऑरीगेमी कॉर्नर में गए तो वहाँ उन्हें अखबार की टोपी पहना दी गई। वे अब टोपी लगाकर घूम रहे हैं।

स्कूल के शिक्षक जहाँ एक ओर बालमेले की व्यवस्था में जुटे हुए हैं, साथ ही वे उन गतिविधियों का अवलोकन भी कर रहे हैं। एक शिक्षक ने दूसरे से कहा, "यार, अपने ज़माने में तो बालमेला कभी हुआ ही नहीं...।" दूसरे शिक्षक बोले, "वो तो चाट मेला होता था..." दोनों ठहाका लगाकर हँस रहे हैं।

वास्तव में, बालमेले की अवधारणा को *एकलव्य* ने एक जुदा स्वरूप प्रदान किया है। आम तौर पर बालमेले पर वयस्कों का वर्चस्व रहता आया है। सीखना-सिखाना तो दूर, बच्चों को उबाऊ और नीरस भाषण सुनने पड़ते हैं बालमेले में। ऊपर से कॉम्पीटीशन का तड़का कुछ इस तरह का कि बच्चे तनाव में ही रहते हैं। दरअसल, बालमेले की अवधारणा का मकसद पढ़ाई की मारा-मारी है ही नहीं। बस, बच्चे और शिक्षक और जो भी बालमेले में शामिल हों, वे सब आनन्द के कुछ पल एक-साथ बिताएँ। ज़ाहिर है कि जब इतना सहज वातावरण हो तो सीखने की प्रक्रियाएँ सिर के बल दौड़कर शामिल हो जाएँगी।

एकलव्य की सोच यह है कि बाल दिवस पर ही क्यों, स्कूल अपनी सुविधा से बालमेला आयोजित करें। बाल दिवस पर भी बालमेला ऐसा हो जो बाल मन को लुभाए। दरअसल, बालमेले का मकसद बच्चों को स्वच्छन्द रूप से अपनी मर्ज़ी का कुछ करने के अवसर देना है। बालमेले की सफलता इसमें निहित है कि बच्चे मज़ा करें।

बहुत कुछ है इस मेले में

अब ज़रा एक-एक करके बालमेले के कॉर्नर्स का ज़ायका लिया जाए। स्कूल कैम्पस के गेट पर बैनर लगाया हुआ है। मैदान में विभिन्न कॉर्नर्स लगाए गए हैं। गेट के पास मिट्टी रखी हुई है। गाँव के कुम्हार को आमंत्रित किया गया है। कुम्हार अपने साथ मिट्टी से बर्तन बनाने का पहिया यानी चाक लेकर आए हैं। पहिये को ज़मीन पर स्थापित किया गया है। कुछ बच्चे मिट्टी से खिलौने बना रहे हैं। कुछ चाक पर मिट्टी रखकर कुम्हार की मदद से तरह-तरह के बर्तन और खिलौने बनाने में मशगूल हैं। कुछ बड़े लोग भी अपने आपको नहीं रोक पा रहे हैं। लीजिए, अब तो एक वयस्क को अपना बचपन याद आ गया और वह मिट्टी से हाथी-घोड़े बनाने में जुट गए हैं। देखते-ही-देखते बच्चों ने कई प्रकार के मिट्टी के खिलौने बना डाले हैं।

पास में ही अखबारों से कठपुतलियाँ बनाई जा रही हैं। एक बच्ची ने दूसरी से कहा, "चल रे, अब हम ऑरीगेमी करते हैं।" "नहीं रे, संगीत में चलते हैं।" "अरे, वहाँ बाद में जाएँगे, पहले नाटक करते हैं।" बच्चे खुद तय कर रहे हैं कि कहाँ जाना है।

कठपुतली कॉर्नर में अखबारों का ढेर रखा हुआ है। अखबारों को तोड़-

मोड़कर मज़ेदार शेर, कुत्ता, बिल्ली, चीता और न जाने क्या-क्या आकृतियाँ बनाई जा रही हैं। हर बच्ची और बच्चा कुछ-न-कुछ बनाने को बेताब दिखाई दे रहा है। लो... ये बन गया शेर ...ये बन गई गाय...और ये...

पास में ही ऑरीगेमी कॉर्नर में जद्दोजहद हो रही है। एक छोटे-से चौकोर कागज़ को सलीके से मोड़कर हर बच्ची और बच्चा उसे आकार देने में व्यस्त है। "...अरे, ऐसे नहीं... हाँ, मैंने ठीक ही किया है... अरे मेरा अभी नहीं बना है... ले चल मैं मदद कर देती हूँ।" ये क्या! यहाँ तो गणित की बातें भी हो रही हैं। त्रिभुज, वर्ग, आयत और भी बहुत कुछ। यहाँ बच्चे गणित से पूरी तरह भयमुक्त दिखाई दे रहे हैं। हर कोई कागज़ से कलाकारी में जुटा हुआ है। अचानक बच्ची के मुँह से निकला, "आहा!" लो बन गई चिड़िया...और यह बन गया गुलदस्ता...।

बच्चे स्वच्छन्द होकर कॉर्नर्स में आते-जाते दिखाई दे रहे हैं। एक बच्ची ने अपने दोस्त से कहा, "चल, विज्ञान में चलते हैं...।" अरे, ये क्या... "देख तो... इस पहेली को हल करते हैं। चल कोशिश तो करते हैं...।" अरे, यह तो मोटर है! "अब आप मुझे दे दो... मैं खुद घुमाकर देखती हूँ।" बिजली की मोटर अब बच्ची के हाथों में आ गई है। "पर यह घूम कैसे रही है? इसमें तो एक सेल है।" यह क्या, दो स्टोव की पिन और साइकिल की रबर ट्यूब का छल्ला! "ऊँहूँ... हूँ..." और यह क्या, यह तो ताँबे का तार जैसा लगता है। "...ताँबे के तार का छल्ला है यह तो! अरे, यह तो ज़ोर-से घूम रहा है। और यह क्या गोल-गोल-सी चीज़? यह तो चुम्बक लगता है। अरे, तो आप ही बताएँ कि ये कैसे घूम रही है?"

...और यह क्या, कागज़ के ढाँचे? और यह क्या, कागज़ पर रंगों की बहार! "अरे, यह तो अपने *बाल विज्ञान* वाला प्रयोग है। क्या कहते हैं उसको... हाँ, क्रोमेटोग्राफी!" और यह क्या, इंजेक्शन की शीशी और वॉल्व ट्यूब से बनाए उपकरण से हायड्रोजन गैस बनाई जा रही है। "...चल, अपन यहाँ बैठकर घुमक्कड़ बनाते हैं। बहुत मज़ा आ रहा है न!"

एक जगह पर बच्चे रंगों के बीच हैं। यहाँ अपनी पसन्द का चित्र बनाया जा रहा है। रूई को अरहर के तिनकों पर लपेटकर ब्रश बनाए गए हैं। उधर एक परात में पानी भरकर, उसमें मिट्टी का तेल बिखेरकर रंग की बूँदें डाल, कागज़ को हौले से बिछाया जा रहा है। कागज़ पर रंग-बिरंगी अद्भुत आकृतियाँ बन रही हैं। बच्चे इन आकृतियों में कल्पना के घोड़े दौड़ा रहे हैं।

स्कूल कैम्पस के बाहर रास्ते से आते-जाते लोग रुक-रुककर देख रहे हैं। एक महिला अपने दूध पीते बच्चे को लेकर कैम्पस में प्रवेश कर चुकी है। वह हर गतिविधि को बड़े ध्यान से

देख रही है। ऑरीगेमी कॉर्नर में जाकर उसने एक टोपी बनाई और अपने नन्हे के सिर पर टिका दी।

एक जगह पर बच्चे नाटक में संलग्न हैं। बच्चों के एक समूह ने पहले नाटक की थीम बनाई और फिर उसका मंचन करने में लगे हुए हैं। वे यहाँ तरह-तरह की भूमिकाएँ अदा कर रहे हैं।

यह क्या... बालमेले में साइकिल! जी हाँ, यहाँ बच्चे साइकिल की कार्यप्रणाली और विज्ञान जानने की कोशिश कर रहे हैं। साइकिल के अलग-अलग पुर्ज़ों और उनकी बनावट को समझाने के लिए साइकिल मरम्मत करने वाले साथी वहाँ मौजूद हैं। वे ज़्यादा पढ़े-लिखे तो नहीं मगर भला उनसे बेहतर साइकिल को और कौन जानता होगा। कुछ बच्चे साइकिल कॉर्नर में घण्टे भर से मगन हैं। एक बात जो देखने में आ रही है, वह यह कि साइकिल कॉर्नर में लड़कियों ने झाँका तक नहीं। इसकी एक वजह कही जा सकती है कि इस तथाकथित पुरुष प्रधान समाज ने कई कामों और ज़िम्मेदारियों का लिंग के आधार पर बँटवारा जो कर रखा है। जब बच्चियों ने साइकिल कॉर्नर की ओर रुख किया तो उनके शिक्षकों ने उन्हें रोक दिया कि यह उनके बस का नहीं है।

मंच बनाया हुआ है मगर भाषणबाज़ी के लिए नहीं। मंच पर बड़े लोग दिखाई ही नहीं दे रहे। मंच तो बच्चों के लिए बनाया गया है। बालमेले की शुरुआत जितनी सहजता के साथ हुई, उतनी ही सहजता समापन में भी दिखाई दे रही है। मंच पर अब कुछ बच्चे नृत्य और संगीत की जुगलबन्दी भरा एक कार्यक्रम प्रस्तुत कर रहे हैं।

सूरज इन दिनों उत्तरायण में घूमता हुआ दिख रहा है, मगर ठण्ड अपना जलवा बिखेरने में कोई कसर नहीं छोड़ रही है। मगर स्कूल कैंपस में अभी भी गर्माहट है। बच्चों का उत्साह हिलोरे ले रहा है। कौन कहता है कि बच्चे समझदार नहीं होते। समझदारी और सूझबूझ की अनोखी मिसाल यहाँ मौजूद है।

मेले के बाद

बालमेला सम्पन्न हो चुका है। बच्चे

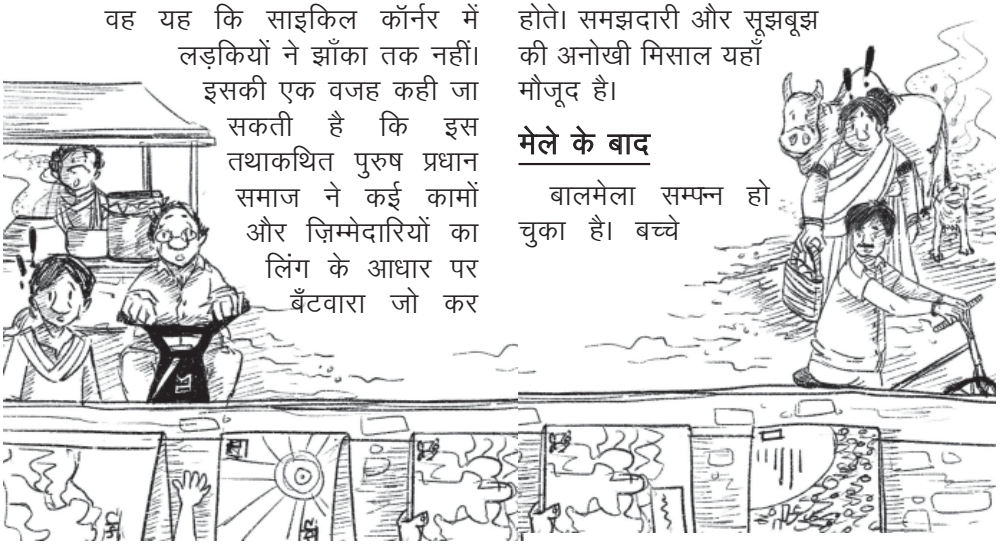

अपने-अपने घरों की ओर लौट रहे हैं। बच्चे और बड़े मुड़-मुड़कर देख, हाथ हिलाकर अभिवादन कर रहे हैं।

शरीर से थक चुके, लँगड़ाते मगर दिमागी तौर पर चुस्ती से सराबोर मास्साब बोले, "अभी तो बच्चों ने ही विदाई ली है, आपने नहीं।" दरअसल, स्कूल कैम्पस में जो भी कुछ दिखाई दे रहा था, वह कई दिनों की मशक्कत और दिमागी सूझ-बूझ का परिणाम था। समस्त शिक्षक एवं प्रधानाध्यापक अब मैदान में गोल घेरे में बैठ गए हैं। बालमेले की समीक्षा की जा रही है यहाँ पर। बस कमी रही तो समय की। एक शिक्षक बोले, "पूड़ियाँ कम पड़ गईं।" भोजन की व्यवस्था में जुटे साथी शर्म महसूस कर रहे थे। मगर जब बिन बुलाए मेहमान बच्चे शामिल हो गए तो यह तो होना ही था।

"बालमेला अपने मकसदों में सफल हुआ है।" गाँव के सरपंच बोले। "लेकिन अब इस यात्रा को आगे कैसे बढ़ाया जाए?" दिलचस्प बात यह कि बालमेले को लेकर कोई सरकारी आदेश नहीं मगर फिर भी हर अभिभावक और शिक्षक को एहसास हो रहा था कि बालमेला बच्चों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बन सकता है।

मास्साब इतने खुश थे कि वे अपनी टाँग में हो रहे दर्द को भूलकर नाचते दिख रहे थे। आखिर में, प्रधानाध्यापक कुछ कहने की बजाय एक गीत गुनगुनाते हुए अपने बचपन में पहुँच गए –

आया है मुझे फिर याद वो ज़ालिम
गुज़रा ज़माना बचपन का,
हाय रे! अकेले छोड़ के जाना और ना
आना बचपन का,
वो खेल वो साथी वो झूले वो दौड़ के
कहना आ छूले...,
हम आज तलक भी ना भूले
हम आज तलक भी ना भूले
ख्वाब सुहाना बचपन का...।

कालू राम शर्मा (1961-2021): अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन, खरगोन में कार्यरत थे। स्कूली शिक्षा पर निरन्तर लेखन किया। फोटोग्राफी में दिलचस्पी। *एकलव्य* के शुरुआती दौर में धार एवं उज्जैन के केन्द्रों को स्थापित करने एवं मालवा में विज्ञान शिक्षण को फैलाने में अहम भूमिका निभाई।

सभी चित्र: पूजा के. मैनन: *एकलव्य*, भोपाल में बतौर जूनियर ग्राफिक डिज़ाइनर काम कर रही हैं। चूँकि वे अन्यथा बातचीत करने में झिझकती हैं, स्केचिंग ने उनके विचारों को सम्प्रेषित करने और टिप्पणियों का दस्तावेज़ीकरण करने में एक माध्यम का काम किया है।